मई-2017

॥ओ३म्॥

मूल्य 10 रुपये

गुरुकुल आश्रम आमसेना की मासिक पत्रिका

कुलभूमि

स्वर्ण जयन्ती वर्ष 2017

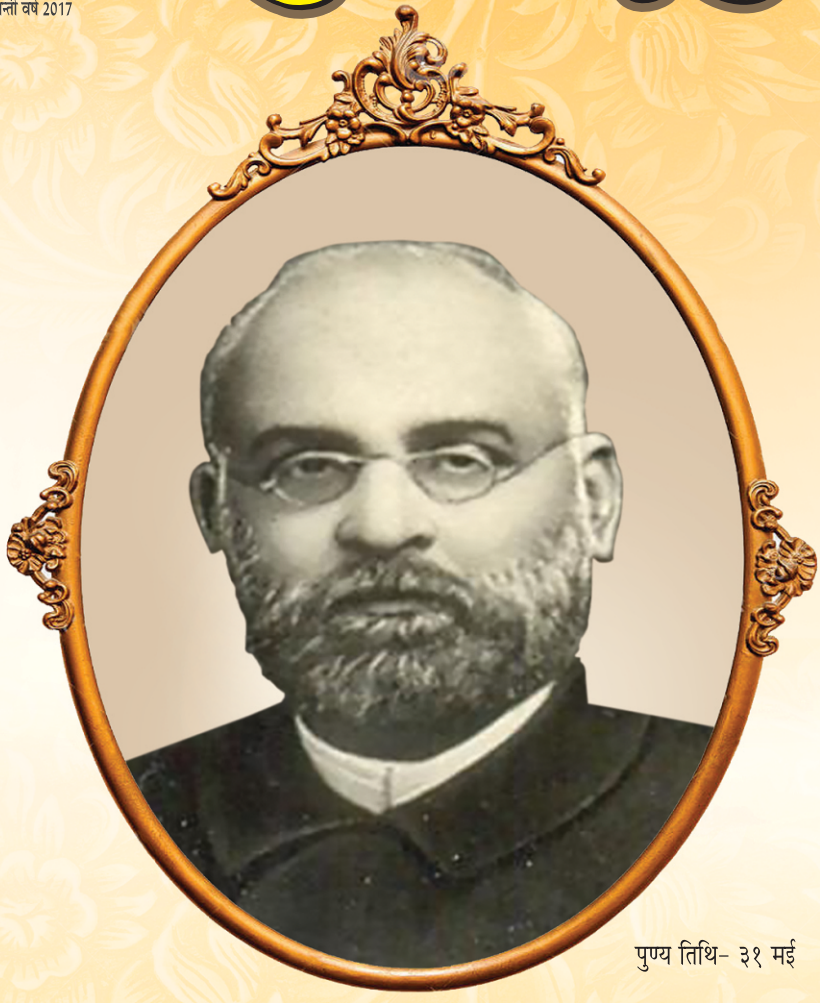

पुण्य तिथि- ३१ मई

ऋषि दयानन्द के प्रिय शिष्य एवं क्रान्तिकारियों के मार्गदर्शक

पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा

गुरुकुल आश्रम आमसेना एवं आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना के ८ स्नातक स्नातिकाएं महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में स्वर्ण पदक प्राप्त किए।

2 शान्ति आश्रम लोहरदगा की ओर से दिल्ली के वैचारिक क्रान्ति शिविर में ५२ छात्र छात्राएं भाग लेने गये।

!! ओ३म् !!

कुलभूमिरियं वितरेज्जगते, सुमतिं विदुषामिहवेदविदाम्।
ऋषिभिश्चरितं महता तपसा, शुभं धर्मधिया सकलोन्नतिकृत।।

कुलभूमि

गुरुकुल आश्रम आमसेना का मासिक मुखपत्र

मई 2017 वर्ष - 40, अंक - 05 वि.सं. - 2074
सृष्टि संवत् - 1, 96,08,53,118, दयानन्दाब्द - 193

प्रतिष्ठाता
श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती
संचालक एवं मुख्याधिष्ठाता

संरक्षिका एवं प्रधाना
माता परमेश्वरी देवी

कुलपति
श्री मिठाईलाल सिंह जी

संरक्षक
श्री डॉ.पूर्णसिंह जी डबास

परामर्श दाता
श्री आचार्य सोमदेव जी शास्त्री
श्री आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी

प्रधान सम्पाद
श्री स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती

सम्पादक
श्री डॉ.कुञ्जदेव जी मनीषी

सह सम्पादक
कोमल कुमार आर्य
ब्र.मनुदेव वाग्मी

आदरी सम्पादक
श्री शरच्चन्द्र जी शास्त्री
सुश्री आचार्या पुष्पा ''वेदश्री''

सहयोगी
श्री जगदीश जी राय बंसल
श्री अवनी भूषण पुरंग जी
श्री राजेन्द्र जी धनखड़
श्री घनश्याम जी अग्रवाल
श्री जगदीश जी पसरीचा
श्री रोहित नरुला जी

व्यवस्थापक
ब्र. राकेश शास्त्री
ब्र. प्रवीण कुमार शास्त्री

महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की तैयारियां प्रारम्भ

दक्षिण-पूर्व भारत को आर्यों के तीर्थस्थान, वैदिक धर्म के रक्षक, भारतीय संस्कृति के प्रहरी, आर्य जगत को उच्चकोटि के विद्वान् एवं सेवक तैयार करने वाले महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना को अब स्थापित हुए ५० वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। इस ५० वर्षिय अर्द्ध शताब्दी पर गुरुकुल का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव अत्यन्त उल्लासमय वातावरण में २३, २४, २५ दिसम्बर २०१७ को मनाया जाएगा। गुरुकुल का यह समारोह सारे आर्य जगत के लिए प्रेरणाप्रद एवं नया उत्साह देने वाला हो। इस पवित्र भावना को लेकर महोत्सव की तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी गई है।

आशा है श्रद्धालु जनों का पूर्ण उत्साह पूर्वक सहयोग एवं आशीर्वाद इस कार्यक्रम को सफल करने को मिलेगा।

लेखों में दिये गये विचारों के लिये सम्पादक उत्तरदायी नहीं है ।

-: प्रकाशक एवं मुद्रक :-

गुरुकुल आश्रम आमसेना

व्हाया - खरियार रोड, जिला नुआपड़ा (ओडिशा) 766109
Web - *WWW.Vedicgurukulamsena.com*, मो.नं. 9437070541/615,
Email-*aumgurukul@rediffmail.com* *7873111213*
खाते का नाम : आचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना SBI खरियार रोड
खाता संख्या : *11276777048* IFSC Code : SBIN*0007078*
गुरुकुल को दिया गया दान में **80G** के अन्तर्गत आयकर मुक्त है ।

वेदोपदेशः

भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुंवां सस्तनुभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

आचार्य ज्ञानेश्वर जी

शब्दार्थ :- भद्रं- सत्य को प्रकट करने वाले शब्द को, **कर्णेभिः**:- कानों से, **श्रृणुयाम**- सुनें, **देवाः**- हे विद्वानों, **भद्रम्**- सुख, शान्ति, सन्तोष, स्वतन्त्रता, निर्भीकता उत्पन्न करने वाले, **पश्येम**- देखें, **अक्षभिः**- आखों से, **यजत्राः**- हे पूजनीय विद्वानों!, **स्थिरैः**- दृढ, **अङ्गैः**- अवयवों से, **तुष्टुवांसः**- स्तुति करते हुए (हम), **तनुभिः**- शरीरों से, **व्यशेमहि**- प्राप्त करें, **देवहितम्**- विद्वानों के लिए हितकारी, **यद्**- जो, **आयुः**- आयु को।

भावार्थ :- आत्मा का सबसे महत्त्वपूर्ण भोजन शब्द और रूप है और यह भोजन कान और आँख रूपी साधनों से जीव को प्राप्त होता है। यह आध्यात्मिक भोजन जितना सात्त्विक, पवित्र, पौष्टिक, उत्तम होगा, आत्मा उतना ही बलवान, रूपवान, आकर्षक, प्रभावशाली होगा। जैसे कि शरीर में तामसिक, राजसिक भोज्य पदार्थों को डालने से शरीर रोगी, निर्बल, कुरूप, कृश, विकृत, अल्पायु हो जाता है। इसलिए मन्त्र में परमपिता परमात्मा ने निर्देश किया है कि हे मनुष्यों! यदि जीवन को दिव्य, भव्य, सुखदायी, दीर्घायु बनाना है तो एक भी शब्द कान में ऐसा नहीं पड़ना चाहिए जो कि आत्मा को अपवित्र बना दे, उसमें राग, द्वेष, ईर्ष्या, अभिमान, असत्य, प्रमाद, लोभ, मोह, स्वार्थ आदि की भावना उत्पन्न कर दें।

आत्मा में जन्म-जन्मान्तर के अविद्या जनित कुसंस्कार पूर्व से सुषुप्त अवस्था में विद्यमान है। उन संस्कारों को ये नये शब्द जागृत कर देते हैं। सचमुच ये नये अभद्र, अश्लील, अशिष्ट शब्द उन बुरे सुप्त संस्कारों को जगाने में, क्रियारूप में लाने में चिङ्गारी का काम करते हैं। यदि अज्ञानी, मूर्ख, अधार्मिक, स्वार्थी, लोभी, व्यक्तियों के बीच हम रहेंगे तो हमें बुरी वाणी सुनने को मिलेगी। ऐसे लौकिक व्यक्ति प्रायः अपनी वाणी में झूठ, छल, कपट, व्यङ्गात्मक, अतिशयोक्तिपूर्ण, कठोर, निन्दात्मक, आदेशात्मक, राग-द्वेष उत्पादक, उलाहनापूर्वक, क्रोध, भय, लोभ, उत्पन्न करने वाली, अस्पष्ट, दो अर्थोवाली, प्रमाण रहित, कल्पना युक्त, व्यर्थ वाणी का प्रयोग, करते रहते हैं। यह भाषा मनुष्यों में गुणों को उत्पन्न न करके अनेक प्रकार के दोषों को उत्पन्न करती है।

सम्पादकीय ...

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

धैर्य (धृति या सहनशीलता) प्राचीन भारतीय संस्कृति या वैदिक धर्म में सभी प्राचीन शास्त्रों में, मानव को सर्वप्रथम मार्गदर्शन करने वाले प्राचीन भारतीय संविधान निर्माता महर्षि मनुकृत मनुस्मृति में भी, रामायण, महाभारत, पुराण आदि सभी प्राचीन एवं अर्वाचीन ग्रन्थों में धर्म के दश लक्षणों का विस्तार से वर्णन किया गया है। मनु जी के अनुसार–

धृतिर्क्षमा दमस्तेयं शौचं इद्रिय निग्रहः।
धीः विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।

इन दश लक्षणों में सर्वप्रथम लक्षण के रूप में धृति (धैर्य सहनशीलता) है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ से ही मानव ही नहीं जीव मात्र में सहनशीलता का अभाव रहता है। इसलिए मनु जी ने एवं हमारे सारे शास्त्रों में धृति को सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रथम स्थान दिया है। यद्यपि इस समय की अपेक्षा प्राचीन समय में आर्य जनों में धृति (धैर्य या सहनशीलता) के अनेकों उदाहरण मिलते हैं।

यदि प्राचीन इतिहास को देखा जाये, प्राचीन घटनाओं पर विचार किया जाये, तो इस देश में धैर्य के उदाहरणों की कमी नहीं हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम चन्द्र जी का जीवन हमारे लिये धैर्य का एक आदर्श उदाहरण है। रामचन्द्र जी अयोध्या प्रवास काल में अपनी जननी कौसल्या की अपेक्षा कैकेयी के पास ज्यादा रहते थे। परन्तु जब मन्थरा के बहकावे में आकर माता कैकेयी ने राम को वनवास जाने का वर मांग लिया तब भी राम ने कैकेयी के प्रति वैसे ही श्रद्धा भक्ति बनाये रखी। जिस मन्थरा की प्रेरणा से श्रीरामचन्द्र जी को वनवास मिला, वनवास से वापस लौटने पर राम सबसे पहले चरण वन्दना के लिये माता कैकेयी के पास पहुँचे। फिर मन्थरा को भी आश्वासन देते हुए कहा, कि आज भी आप हमारी वैसी ही पालन करने वाली माता जी हैं, हम आपके गोद में खेले अतः आप निर्भयता पूर्वक रहें अब हम आपकी सेवा करेंगे। जब अयोध्या से निकल कर सारथी सुमन्त्र का अगले दिन प्रातः काल
वापस भेजने लगे, तब श्रीरामचन्द्र जी ने महाराज दशरथ एवं माता कैकेयी को धैर्य धारण करने का सन्देश दिया। इसी प्रकार महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में परदादा भीष्म जी की प्रेरणा

ऋषि उवाच

ईश्वर की उपासना ईश्वर के लाभ पहुँचने या खुशामद के लिए नहीं है। केवल अपने अज्ञान को दूर करने के लिए उसके गुणों का चन्तन करना उपासना है। उसके गुण हम धारण करके मुक्त बनें यही उपासना का प्रयोजन है। ईश्वर निर्लेप है, निराकांक्षी है वह न पूजा भेंट चाहता है न बलिदान। वैदिक यज्ञों का प्रयोजन है वातावरण को शुद्ध निरोग प्राणप्रद बनाना। वेदों में दार्शनिक ज्ञान, गणित ज्ञान, आयुर्वेद, संगीत और पदार्थ ज्ञान की चर्चा भी यन्त्र तन्त्र है। वेदों के अनुसार जीवात्मा अमर है, अल्पज्ञ है। ज्ञान के प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है और अज्ञानवश बन्धन में पड़ जाता है। अपने कर्मफल भोगने के लिए ही अनेक शरीर धारण करता है। योग द्वारा जब कर्म से संस्कार वासना दूर हो जाती है तब मोक्ष पा लेता है। इस प्रकार लौकिक और पारलौकिक सभी विषयों में वेद पुरुषार्थ की शिक्षा देता है। **वेदोद्धारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती**

पर श्रीकृष्ण जी के सम्मान करने की बात आयी, तो शिशुपाल ने इसे सहन नहीं कर सका। वह श्रीकृष्ण जी का विरोध करके उन्हे गालियां देने लगा। तब कई राजा उनको मारने के लिए उठे तब श्रीकृष्ण जी ने कहा, कि यह मेरी बुआ का बेटा है। इसलिए मैं शिशुपाल के सौ गालियों को सहूंगा। भारतीय इतिहास में सहनशीलता का यह अपूर्व उदाहरण है। बगांल के दादू भक्त की सहनशीलता का भी एक बहुत ही उत्कृष्ट उदाहरण है। जहां दादू जी ठहरे हुए थे उस नगर के कोतवाल दादू जी की प्रशंसा सुन कर उनसे मिलने के लिए गया। जब दादू जी अपने निवास पर नहीं मिले तो उनके भक्तों ने बताया, कि दादू जी तो रास्ता साफ करने के लिए जगंल में गये हैं। तब कोतवाल ने अपना घोड़ा उधर ही दौड़ाया। जंगल में जाकर उसने देखा कि एक लगोंटधरी व्यक्ति कुदाल से खोद-खोद कर कांटे निकाल रहा है। तब कोतवाल ने दो-तीन बार उससे दादू जी का पता पूछा पर वे कुछ न बोलकर अपना काम करते रहे। उससे नाराज होकर कोतवाल ने उनके ऊपर चाबुकों से प्रहार किया तो उनका खून बहने लगा। तब फिर कोतवाल ने सोचा कि यह जरुर ही कोई पागल व्यक्ति है। आगे आगे चलकर एक आदमी कोतवाल को मिला, कोतवाल ने जब उसे पूछा कि दादू भक्त कहां है तो उस व्यक्ति ने कहा कि आप तो दादू भक्त को पीछे छोड़ आये, जो रास्ते में कांटा बिन रहा है वही दादू भक्त है। तब कोतवाल को बड़ा पश्चाताप हुआ। और वह वापिस जाकर उनके पैरों पर गिड़गिड़ाकर माफी मांगने लगा, तब दादू जी बोले कोई बात नहीं आपने कुम्हार के पास जाकर अवश्य देखा होगा, कि घड़ा कैसा है

यह परखने के लिए उसे ठोककर देखते हैं। आपने भी मुझे पहले ठोककर देख लिया कि दादू भक्त गुरु बनाने लायक है या नहीं।

इस युग के वेदोद्धारक आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का जीवन के पदे-पदे धैर्य एवं सहनशीलता का आदर्श उदाहरण है। उन्होने सारे जीवन पाखण्ड का खण्डन किया, अज्ञान में भटके आर्य (हिन्दूओं), ईसाइयों एवं मुसलमानों को भी उनके ग्रन्थों के आधार पर उनके दोष दिखाकर शान्ति का मार्ग बतलाने का यत्न किया। परन्तु स्वार्थ में फंसे अज्ञानी लोगों ने उनकी भावना को नहीं समझा। अत: अधिकतर स्थान पर गाली गलोच के साथ उनके ऊपर ईट, पत्थर भी बरसाये। स्वार्थी अज्ञानी लोगों ने चौदह बार विष देकर उनको मारने की कोशिश की। अन्त में पापी जगन्नाथ द्वारा दूध में संखिया विष देने से उनका शरीर छलनी छलनी हो गया। परन्तु उस विष देने वाले जगन्नाथ को भी ऋषि ने क्षमा ही नहीं किया, अपितु मार्गव्यय देकर उसे नेपाल भगा दिया। ऐसा उदाहरण मिलना आज असम्भव है। परन्तु हम दूसरों की ही बात क्या कही जाय आर्यजन थोडा सा भी मतभेद हो जाने पर एक दूसरे से ही बात करना ही छोड़ देते हैं।

फिर सामान्य जनता के विषय में क्या कहा जाय। इस समय संसार में धैर्य का अभाव या असहनशीलता सबसे बड़ा संकट बना हुआ है। पत्नि पति की बात नहीं सहती थोडी सी बात पर पती पत्नी को मृत्यु के द्वार तक पहुँचा देता है। धैर्य न होने पर पिता पुत्र को मार देता है। धैर्य के अभाव होने के कारण पुत्र पिता को मारने से भी नहीं हिचकता।

स्कूल कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्र छात्राओं को यदि उनका अभिभावक एवं अध्यापक कुछ कह दे तो वे आत्महत्या कर लेते हैं। आजकल चौदह वर्ष के बालक बालिकाओं को भी माता पिता कुछ कहने से डरते हैं। क्योंकि कई बार बालक बालिका अपना जीवन संकट में ड़ाल देते हैं। आजकल के सभी समाचार पत्र आत्महत्याओं की ऐसी घटनाओं से भरे रहते हैं अत: समाज को सुरक्षित रखने के लिए, समाज में शान्ति स्थापित करने के लिए धैर्य एवं सहनशीलता को आगे बढ़ाने की महती आवश्यक है।

¤¤¤

मित्र उवाच

समझदार व्यक्ति वही है जो अपने मन और शरीर को सदा शान्त रखने का यत्न करता है। तथा शान्त मन से विचार करके अपना, परिवार का, अपने समाज का हित करने का प्रयत्न करता है।

चौ. मित्रसेन जी आर्य

प्राचीन भारतीय विद्यासभा गुरुकुल न्यास के प्रधान कैप्टन रुद्रसेन जी का उत्साह पूर्वक स्वर्ण जयन्ती की तैयारी करने का आग्रह

८ फरवरी को प्रात:काल गरुड़ नगर की यज्ञशाला में साप्ताहिक सत्संग में श्रोताओं को संबोधित करते हुए उन्होने कहा कि सौभाग्य से इस वर्ष गुरुकुल आश्रम आमसेना का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया जायेगा। इस महोत्सव के मनाने में हमें उत्साह एवं श्रद्धापूर्वक तन, मन, धन से सेवा करनी है। हो सकता है ऐसा शुभावसर हमारी जीवन में दूसरी बार न आए।

इस गुरुकुल के संस्थापक एवं संलाचक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी एवं हमारे पथ प्रदर्शक हमारे पिता चौ. मित्रसेन जी आर्य ने इस गुरुकुल को एक विशाल वट वृक्ष का रूप दिया है। स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर हमें प्रेरणा लेकर समाज को पथ प्रदर्शक करने वाले विद्वान् एवं कार्यकर्त्ता तैयार करने हैं। वैसे हमारा यह सौभाग्य है कि इन दोनों पूज्य तपस्वी, कर्मठ महापुरुषों के पुरुषार्थ से आज गुरुकुलों एवं आर्य संस्थाओं में इस गुरुकुल का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इस गुरुकुल से अनेक उच्चकोटि के विद्वान् एवं समर्पित कार्यकर्त्ता तैयार हुए हैं।

प्रस्तुतकर्त्ता- लोकेश्वर आर्य

इस वर्ष गत २३ अप्रैल को गुरुकुल के ८ स्नातक स्नातिकाओं को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में हरियाणा के महामहिम राज्यपाल से स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। यह हमारे लिए गर्व बात है। आशा है इन गुरुकुलों में पढ़ने वाले बालक एवं बालिकाएं इस पुनीत परम्परा को आगे बढ़ाते रहेंगे।

शास्त्र चर्चा

वेद का एक विद्वान् भी हजारों मूर्खों से अधिक प्रामाणिक

एकोऽपि वेदविद्धर्म यं व्यवस्येद द्विजोत्तमः।
स विज्ञेयः परो धर्मो नाज्ञानामुदितोऽयुतैः।।

(एकः अपि वेदवित) यदि एक अकेला वेदों का जानने हारा द्विजों में उत्तम सन्यासी **(य धर्म व्यवस्येत्)** जिस धर्म की व्यवस्था करे **(सः परः धर्मः विज्ञेयः)** वही श्रेष्ठ धर्म है, **(अज्ञानाम् अयुतैः उदितः न)** अज्ञानियों के सहस्त्रों, लाखों, करोडों मिलके जो धर्म निर्णय करने में मूर्ख असमर्थ-

अवृतानाममन्त्राणां जातिमात्रोपजीविनाम्। सहस्त्रशः समेतानां परिषत्वं न विद्यते।।

(अवृतानाम्) जो ब्रह्मचर्य, सत्यभाषण आदि व्रत, **(आमन्त्राणाम्)** वेदविद्या वा विचार से रहित, **(जातिमात्र-उपजीविनाम्)** जन्ममात्र से शूद्रवत् वर्तमान है, **(सहस्त्रशः समेतानाम्)** उन सहस्त्रों मनुष्यों के मिलने से भी **(परिषत्वं न विद्यते)** सभा नहीं कहाती।

यं वदन्ति तमोभूता, मूर्खा धर्ममतद्विदः। तत्पापं शतधा भूत्वा तद्वक्तृननु गच्छति।।

(तमोभूताः मूर्खाः) तमोगुण अर्थात् अविद्या से युक्त, मूर्ख **(अतद्वेदः)** वेदोक्त धर्मज्ञान से शून्य जन **(यं धर्म वदन्ति)** जिस धर्म का उपदेश करते हैं **(तत् पापम्)** वह धर्मरूप में कहा अधर्मरूप पाप **(शतधा भूत्वा)** सौ गुणा होकर अथवा सैकड़ों रूपों में फैलकर **(तत् वक्तृन् अनुगच्छति)** उन वक्ताओं को लगता है अर्थात् उससे सैकड़ों पाप फैलते हैं और फिर उनकी बुराई वक्ताओं को मिलती है।

संकलन कर्ता:-कु. पूर्णिमा आर्या

गुरुकुल आश्रम आमसेना में नया प्रवेश प्रारम्भ

अब स्कूलों, कॉलेजों में तीव्रगति से चरित्रहीनता बढ़ रही है। छोटे-छोटे बालक भी वासना के जाल में फंसते जा रहे हैं। अतः इन कुसंस्कारों से देश के भावी बालक-बालिकाओं के चरित्र की रक्षा गुरुकुलों की आर्ष शिक्षा प्रणाली ही कर सकती है।

अतः जो सज्जन अपने होनहार पुत्र-पुत्रियों को चरित्रवान्, विद्वान्, बलवान, तेजस्वी बनाना चाहते हैं, जो वृद्धावस्था में अपना सहारा चाहते हैं तो गुरुकुल आश्रम आमसेना, आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना, आर्ष ज्योति गुरुकुल कोसरंगी (छ.ग.), परममित्र आर्ष गुरुकुल गेरवानी, रायगढ़ (छ.ग.) आदि में प्रवेश करा सकते हैं। गुरुकुल में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के आर्ष पाठ्यक्रम के साथ छ.ग. संस्कृत मण्डल तथा पुरी विश्वविद्यालय से भी परिक्षायें दिलायी जाती है। पढ़ाई के साथ औषध निर्माण, पैकिंग, कम्प्यूटर, कृषि, गौसेवा की भी क्रियात्मक शिक्षा स्वावलम्बी बनाने के लिये दी जाती है।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9437070541/615, 8280283034, 7873111213

धर्म शिक्षा

संग्राहक- आचार्य प्रवीण कुमार

प्रश्न- धर्म किसे कहते हैं?

उत्तर- धर्म उन स्वाभाविक गुणों का नाम है जिनके होने से वस्तु की सत्ता स्थिर रहती है और जिनके न होने पर वस्तु की सत्ता स्थिर नहीं सकती।

प्रश्न- हमें दृष्टान्त देकर समझा दो?

उत्तर- गर्मी और तेज अग्नि के धर्म हैं। जहां अग्नि होती है वहां गर्मी और तेज अवश्य होंगे जहां गर्मी और तेज न रहेंगे, वहां अग्नि भी न रहेगी।

प्रश्न- और दृष्टान्त दो?

उत्तर- मनुष्य जीवन के लिए शरीर का अङ्ग और प्राण आवश्यक है। यदि शरीर का कोई अङ्ग कट जाए तो मनुष्य के जीवन का नाश नहीं होगा, परन्तु प्राणों के न रहने पर मनुष्य कभी जीवित न रहेगा।

प्रश्न- क्या जीव का धर्म प्राण धारण करना है?

उत्तर- नहीं, जीव का धर्म ज्ञान और प्रयत्न हैं, अर्थात् ज्ञान के अनुसार कर्म करना।

प्रश्न- जीव को कर्म करने की आवश्यकता क्यों हुई?

उत्तर- जीव अल्पज्ञ है, अतः उसे दुःख प्राप्त होता है, उस दुःख को दूर करने के लिए जीव को कर्म करने की आवश्यकता है।

प्रश्न- दुःख का लक्षण क्या है?

उत्तर- आवश्यकता का होना और उसकी पूर्ति के साधनों का न होना दुःख है, या स्वतन्त्रता का न होना दुःख है।

प्रश्न- दुःख का अर्थ तो तकलीफ है?

उत्तर- दुःख और तकलीफ दो पर्यायवाची शब्द हैं। जो लक्षण दुःख का है वह तकलीफ है।

प्रश्न- दुःख के वास्ते कोई प्रमाण देकर समझाओ?

उत्तर- एक मनुष्य घर में बैठा है, उसे कोई कष्ट नहीं है, परन्तु उसे घर से निकलने से बलपूर्वक रोक दिया जाए तो यह बन्धन ही दुःख है। जब क्षुधा लगे और भोजन न मिले तो दुःख है, यदि भोजन मिल जावे तो कष्ट नहीं। इसी प्रकार बहुत-से उदाहरण मिल सकते हैं।

प्रश्न- जीव अल्पज्ञ क्यों है?

उत्तर- एकदेशी अर्थात् परिच्छिन्न होने से।

प्रश्न- जीव दुःख से किस प्रकार छूट सकता है?

उत्तर- परमेश्वर के जानने और उसकी आज्ञानुसार कार्य करने से।

प्रश्न- परमेश्वर एक है या अनेक?

उत्तर- ईश्वर एक है।

प्रश्न- ईश्वर कौन है?

उत्तर- जो इस जगत् को रचनेवाला, पालनेवाला और नाश करनेवाला है।

प्रश्न- ईश्वर के होने में क्या प्रमाण है?

उत्तर- जगत् की प्रत्येक वस्तु का नियमानुसार कार्य करना और प्रत्येक वस्तु में नियम होना और इन नियमों के परीक्षार्थ वेद-जैसे पूर्ण पूर्ण शास्त्र का होना।

धर्म शिक्षा से साभार

बाल संसार

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

आजकल महात्मा चेतन्यमुनि जी अपने कुटिया में रहकर स्वाध्याय साधना में लगे हुए थे। सायंकाल जब भी वे बाहर आकर बैठते तो महात्मा जी के प्रति श्रद्धा रखने वाले बहुत से श्रद्धालु आकर बैठ जाते,जब एकबार महात्मा जी विश्राम करने के लिए बाहर आकर बैठे तो प्रतिदिन की तरह उस दिन भी श्रोता आकर बैठ गये, इन श्रोताओं में महात्मा जी के प्रिय शिष्य भी थे इन में से एक शिष्य देवसुमन ने स्वामी जी के चरणस्पर्श करके खडे होकर कुछ पूछने की आज्ञा मांगी। तब स्वामी जी से देवसुमन ने पूछा गुरुदेव धर्म, मत, सम्प्रदाय ये सब शब्द पर्यायवाची या इनके अर्थों में कुछ भेद हैं।

महात्मा चेतन्यमुनि जी- प्रिय सज्जनों प्रत्येक वस्तु के स्वभाविक गुण को धर्म कहते हैं। जैसे अग्नि का धर्म प्रकाश देना गरम करना या जलाना है पानी का धर्म शीतलता देता है परन्तु मत या सम्प्रदाय से व्यक्ति विशेष या कुछ व्यक्तियों द्वारा अपनी सुविधा अनुसार बनाए गये को सम्प्रदाय कहते हैं। ये मत या सम्प्रदाय अलग-अलग देशों में समय-समय पर वहां के जनता के कल्याण के लिए वहां के महापुरुषों के बनाये हुए हैं।

ये परिवर्तनशील तथा सामूहिक होते हैं। उन मतों के चलाने वाले स्थान विशेष या देशकाल के अनुसार बनाते हैं। जैसे हमारे देश में आर्य (हिन्दू) धर्म में एक समय में एक स्त्री रखने का विधान है, जो पुरुष जिस स्त्री से विवाह करता है वह स्त्री उसे आसानी से नहीं छोड़ सकती। परन्तु पाश्चात्य देशों में थोड़ा सा ही भेद होने पर स्त्री-पुरुष अलग हो जाते हैं। वे दोनों दूसरे स्त्री पुरुषों से विवाह कर लेते हैं। अरब देश के मुसलमानों ने तो विवाह की और विचित्र स्थिति है। यद्यपि वहां भी युवक-युवती उत्साह पूर्वक विवाह करते हैं। परन्तु जब पुरुष का स्त्री से मन भर जाता है तो तलाक, तलाक, तलाक तीन बार कहकर पुरुष अपने विवाही स्त्री को छोड़कर दूसरी युवती से विवाह कर लेता है। वैसे ही एक मुसलमान युवक एक समय में ४ स्त्री तक रख लेता है। इससे उन घरों में कलह या अशान्ति बनी रहती है।

रामसेवक- ये मुसलमान धर्म तो पशुओं की तरह है वे मुसलमान इतने भोगी-विलासी क्यों होते हैं?

स्वामी चेतन्यमुनि- क्योंकि मुसलमानों का मत तो भोग प्रधान है। प्रायः उनका जीवन पशु जैसा चलता है। सब मनुष्यों और मतों में मुसलमान धर्म सबसे निकृष्ट मत है। ये लोग कट्टर होते हैं, अपने धर्मग्रन्थ कुरान के विरुद्ध कुछ नहीं सुन सकते यद्यपि कुरान में बहुत सी अच्छी बातों का उपदेश है। कई स्थान पर अहिंसा का आदेश है पशु पक्षी पर दया करने का प्रदान है। परन्तु ये मुसलमान जिस ग्रन्थ के आयतों को प्रमाणिक मानते हैं, उन आयतों में मुसलमान से दूसरे मत वालों को काफिर कहा जाता है। काफिर को मारना

पुण्य बतलाया गया है। इन आयतों ने ही सारे संसार में हिंसा का ताण्डव फैला रखा है, ये लोग हिन्दू, ईसाई आदि को अपना शत्रु मानते हैं। मुसलमानों के दो मुख्य भेद शिय्या सुन्नी है यद्यपि ये दोनों मत वाले मुहम्मद जी को अपना पीर पैगम्बर या भगवान् मानते हैं। ये मुहम्मद या कुरान के अतिरिक्त और किसी को नहीं मानते हैं। फिर भी दोनों एक दूसरे के शत्रु बने रहते हैं। कुछ देशों में शिय्या सम्प्रदास के लोग हैं तो किसी देश में सुन्नी सम्प्रदाय के इसलिए दोनों मतों में सदा झगड़े होते रहते हैं। किसी भी मुसलमान देश में स्थायी शान्ति नहीं है। अरब देश के छोटे छोटे टूकड़े होकर सैकड़ों देश बन गये।

आजकल तो उन देशों में नए-नए पैगम्बर पैदा होते जा रहे हैं। वे अपने आपको सर्वे सर्वा मानते हैं। यद्यपि वे नाम कुरान का लेते हैं परन्तु कुरान का नाम लेकर उन लोग ने हिंसा का ताण्डव फैला रखा है। आजकल सिरीया आदि देश संसार के लिये अशान्ति का आधार बन गया है। सिरीया को लेकर ही बिना कारण के अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए अमेरीका, रूस उस मुसलमान देशों पर बमों की वर्षा कर रहे हैं। कई मुसलमान देशों के निवासी तो अपने घर वार छोड़कर दूसरे देशों में जा रहे हैं। वे जहां भी जाते हैं हिंसा फैलाते हैं हिंसक लोग पशु पक्षी यहां तक की स्त्री में भी जीवन नहीं मानते। यद्यपि आजकल की शिक्षा से स्त्री में जीवन मानने लगे हैं। वे शिक्षित मुसलमान मुल्ला मौलवी भी स्त्री को अपने से नीच तथा भोग्या मानते हैं। कहने को कुछ भी कहें परन्तु उन मतों में स्त्री जाति का कोई महत्व नहीं है। मनुष्य के सबसे उपयोगी वस्तु गौ के मांस को खाना अपना परम धर्म मानते हैं जबकी भारतीय संस्कृति में गौ को माता का स्थान दिया गया है। क्योंकि जननी माता तो दो चार वर्ष तक ही बच्चों का पालन पोषण करती है, गौ तो जीवन भर दुग्ध, घी, गोबर देकर मनुष्य की सेवा करती है। गौ की प्रत्येक वस्तु दूध, घी, गोबर, मूत्र, चमड़ा आदि सभी मनुष्य को जीवन देने वाले हैं। अत: वेद में गौ को अहन्या अर्थात् न पारते योग्य कहा है। वेद में गौ हत्यारों को मृत्यु दण्ड देने का आदेश दिया है। गाय का घी, दूध अमृत तुल्य है।

मधुमेह ?

एक मान्यतम और सुरक्षित आयुर्वेद औषधि

बसंत कुसुमाकर रस

असली स्वर्ण भस्म और अन्य अमूल्य द्रव्यों से बनाया गया बसंत कुसुमाकर रस मधुमेह में होनेवाले शारीरिक दौर्बल्य, थकावट, अनिद्रा, स्मृति की कमी एवं अन्य उपद्रवों को दूर करते हुए मधुमेह पर नियंत्रण करता है । मधुमेह में मधुमेहान्तक रस भी बहुत उपयोगी है।

निर्माता एवं विक्रेता गुरुकुल आश्रम आमसेना, नुआपड़ा (ओडिशा)

विद्यार्थी और तनाव

श्री अरविंद राणा

१. नकारात्मक दृष्टिकोण– नकारात्मक मानसिकता या विचार शैली से व्यक्ति निराशावादी और कार्यों से भागने वाला (पलायन वादी) बनता है। वह हमेशा यही विचारता रहता है–

ð सब जगह, सबकुछ गलत ही गलत हो रहा है।

ð सच्चाई का, मूल्यों का जमाना रहा ही नहीं।

ð हम लाख अच्छा करने का प्रयास करेंगे, तो भी बुरा ही होगा।

ð सिर्फ मेहनत से कुछ भी हासिद ल नहीं होता, नसीब भी होना चाहिए अथवा आपकी उँची पहुँच हो या आपके पास खूब पैसा हो तो आप सफल हो सकते हैं।

ð सबकी तरह हमें भी सिर्फ अपना फायदा ही सोचना चाहिए।

ð जब कोई लाभ होना ही नहीं तो कार्य में मेहनत कर समय शक्ति नष्ट क्यों करें? इससे तो घर में आराम से बैठना भला। ऐसे नकारात्मक दृष्टिकोण के होने से व्यक्ति में हर छोटी–छोटी बातों में अन्यों को या परिस्थितियों को दोषी ठहराने की आदत बन जाती है। वह आसपास होने वाली हर घटना से असंतुष्ट रहता है और उसमें कोई न कोई कमी निकलता रहता है। अपनी परेशानियों का रोना ही रोता है। उसका ध्यान इस पर नहीं होता कि उसे क्या करना चाहिए, उसका ध्यान इस पर होता है कि दूसरे लोग क्या करते हैं या उन्हे क्या करना चाहिए था पर नहीं किया अथवा गलत कर दिया। इससे वह हमेशा मानसिक रूप से असंतुष्ट और तनावग्रस्त रहता है तथा दोषारोपण, चुगली जैसी आदतों के चलते दूसरों के साथ भी उसकी तनातनी (घर्षण/तू–तू, मैं–मैं) लगी रहती है।

यदि हममें भी ऐसी नकारात्मक या निराशावादी मानसिकता है तो उसे शीघ्र दूर करने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि यह हमें निराशावादी और अकर्मण्य (निठल्ला) बनाती है। आप आशावादी हैं तो छोटी–छोटी समस्याएं, विफलताएं या विपरीत परिस्थितियां आपके मार्ग की बाधा नहीं बन पायेगी। आशावादी लोग जानते हैं कि हर रात के बाद सवेरा अवश्य आता है, उनका ध्यान (फोकस) सिर्फ अपने लक्ष्यों और दायित्वों पर ही रहता है, न की अन्यों के दोषों पर। वे यह सोचते हैं कि कोई भी स्थिति १०० प्रतिशत् अच्छी और कोई भी व्यक्ति १०० प्रतिशत् पूर्ण अर्थात् परफेक्ट नहीं होता। अच्छी और बुरी स्थितियां कम और अधिक मात्रा में हमेशा साथ–साथ रहती है। उन्हे स्वीकारने और यथा सम्भव नकारात्मक स्थितिओं को सकारात्मक बनाने का पुरुषार्थ करते रहने पर ही हम अपने आस–पास अच्छी स्थितियां या वातावरण उत्पन्न कर सकते हैं। भाग्य को या अन्यों को दोष देने से कुछ भी हासिल नहीं होता।

ऐसा सोचने वाला व्यक्ति उत्साह पूर्वक लम्बेकाल तक हाथ में लिए कार्य को पूरा करने का प्रयास जारी रखता है। उसे बीच में छोड़ता नहीं, अत: देर से ही सही वह निश्चित रूप में सफलता प्राप्त करता है। उसका जीवन हमेशा प्रगति की दिशा में आगे बढ़ता है। उसकी आशा और आत्मविश्वास उसे निष्फल होने के भय, चिन्ता से और उससे उत्पन्न होने वाले तनाव से मुक्त रखते हैं।

स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में स्नातक परिचय

श्री लक्ष्मीप्रसाद शास्त्री :- उत्कल प्रान्त के सम्बलपुर जिला अन्तर्गत नुआपली ग्राम के एक प्रतिष्ठित कुलीन परिवार में पिता श्री संकीर्तन नायक के प्रांगण में आपने सर्वप्रथम १५/०७/१९६२ को नेत्र खोले। आपको आपके पिताश्री ने ०१/०६/१९६९ को पूज्यपाद आचार्य श्री के चरणों में समर्पित किया। आप प्रारम्भ से ही मेधा बुद्धि संपन्न थे, प्राथमिक शिक्षा घर में ही आपने समाप्त कर ली थी, इस गुरुकुल में आपने विधिवत् मध्यमा, शास्त्री, आचार्य की अपाधियां हस्तगत की पश्चात् गुरुकुल में ही अध्यापन कार्य करते हुए साहित्याचार्य जगन्नाथ विश्वविद्यालय पुरी से योग्यतापूर्ण अंकों से उत्तीर्ण किया। आप सौम्य शान्त प्रकृति के हैं, आप सादा जीवन उच्च विचार के अक्षरशः पालक हैं। अब नवापारा नैशनल हाईस्कूल में संस्कृत अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

श्री जगन्नाथ शास्त्री :- आपको भी इस पवित्र गुरुकुल का एक आदर्श स्नातक बनने का पुण्य लाभ प्राप्त हुआ। आपका जन्म १७/११/१९६२ को सम्बलपुर जिला के तबला नामक ग्राम में श्री नारायण मेहेर जी के घर हुआ। आपके माता पिता उदारचेता, धार्मिक कर्मकाण्ड के प्रति आस्थावान् हैं, इन्हीं गुणों के फल स्वरूप आपके पिताजी ने ०२/०६/१९७२ को आपको गुरुकुल में प्रवेश कराया। यहां पर आपने शास्त्री तक शिक्षा प्राप्त कर श्रीमद्दयानन्द वेदविद्यालय गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली में आचार्य तथा बी. एड्. (शिक्षाशास्त्री) की उपाधि प्राप्त कर दिसम्बर १९८७ से अपना आगे का जीवन शिक्षा के क्षेत्र में लगा दिया। आप एक लेखक तथा गम्भीर विद्वान् हैं। इस समय आप नवोदय विद्यालस सुन्दरगढ़ में अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

श्री नगेन्द्र शास्त्री :- श्री नगेन्द्र कुमार शास्त्री का जन्म १२/०९/१९६१ को मध्यप्रदेश के सिंघोड़ा नामक ग्राम के श्री जगदिश्चन्द्र पाणिग्राहि के घर में हुआ। आपके पिताजी ने ०४/०४/१९७४ को गुरुकुल आमसेना में प्रवेश कराया। आपकी बुद्धि बहुत अच्छी थी जिससे विषयों को शीघ्र ही हृदयगंम कर लेते थे। आपने गुरुकुल में शास्त्री तक अध्ययन किया। संस्कृत के गम्भीर विद्वान् होने के साथ-साथ कुशल वाक् पण्डित भी हैं। इस समय आप नृसिंहनाथ संस्कृत विद्यालय में वरिष्ठ संस्कृत शिक्षक पद पर अध्यापन कर रहे हैं।

क्रमशः

उत्कल साहित्य संस्थान गुरुकुल आमसेना द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें:-

01. सत्यार्थ प्रकाश	- 40.00	07. विष चिकित्सा	- 30. 00
02. खिलते फूल	- 8.00	08. कन्या और ब्रह्मचर्य	- 05.00
03. गीत कुञ्ज	- 10.00	09. ईश्वर कहां है ?	- 10.00
04. सच्चा सुखी कौन	- 10.00	10. सच्चा धर्म	- 05.00
05. विचित्र ब्रह्मचारी	- 05.00	11. दैनिक उपासना	- 10.00
06. वैदिकधर्म प्रश्नोत्तरी	- 15.00	12. योगासन एवं प्राणायाम	- 25.00

समृद्धि के नौ सूत्र

प्रेषक- विकास कुमार शास्त्री

सर्वप्रथम मनुष्य को यह समझ लेना होगा, कि 'समृद्ध' होना व 'धनिक' होना ये दोनों बातें बिल्कुल अलग-अलग हैं। यदि हम जरा विचार करें तो पहले तो धन को पैदा करने में कष्ट , फिर पैदा किए हुए धन को रखवाली में दु:ख, उसके नष्ट होने में दु:ख, खर्च होने में दु:ख, चोरी का भय, धन अधिक होने पर तृष्णा व मोह, कम होने पर हृदय में जलन और अन्त में धन के त्याग में दु:ख ही हाथ लगता है तो फिर धनिक होने पर ही समृद्ध हो, सुखी हो, ऐसा तो बिल्कुल नहीं लगता। शास्त्रों में व संतों की वाणी में जहां नौ गुण विद्यमान होंगे वहां सुख, शान्ति व समृद्धि अपने आप अवतरित होगी-

श्रमशीलता- समय और श्रम को किसी भी उपयुक्त प्रयोजन में निरन्तर लगाये रहना।

साहस- अपने कर्म का दृढ़ता पूर्वक पालन करना, सभी दुष्प्रवृत्तियों के साथ साहस के साथ संघर्षरत रहना और आत्मोद्धार के लिए सतत संघर्षरत रहना।

सावधानी- सावधान रहते हुए प्रयासरत रहना कि अपने अन्दर अनाचार का प्रवेश ना होने पाए।

समझदारी- परिणामों पर गंभीरता पूर्वक विचार करके कार्य करना।

सुव्यवस्था- प्रत्येक वस्तु को सुव्यवस्थित रखना। समय का निर्धारण करते हुए सुव्यवस्थित दिनचर्या आदि का अनुशासन पूर्वक पालन करना।

ईमानदारी- आर्थिक और व्यवहारिक क्षेत्र में सत्यता का व्यवहार, छल से बचाव, अनैतिक आचरण से दृढ़ता पूर्वक बचना।

शिष्टता- शालीनता, सज्जनता सदाचार का सर्वथा पालन करना। अपनी नम्रता एवं दूसरों की प्रतिष्ठा का सदा ख्याल रखना।

उदार सहकारिता- मिल-जुलकर कार्य करना, पारस्परिक आदान-प्रदान, स्वार्थ का त्याग कर परहित की भावना से कार्य करना।

मितव्ययिता- सादा जीवन, उच्च विचार व साधनों को सीमित रखना। उपर्युक्त नौ 'क्रिया प्रधान' और 'भाव प्रधान' गुणों को व्यवहार में लाने से निश्चित रूप से जीवन में सुख व समृद्धि का समावेश होता है।

यज्ञ योग ज्योति से साभार

एक आर्य युवक की अरब देशों की रोमांचकारी यात्रा

क्रमागत..... रुचिराम जी ने मसकत के मुसलमान बादशाह से भी मुलाकात की थी, और उसे हिजबुल्लाह का सिद्धान्त समझाया था। उसने इस धर्म के प्रचार के लिये सौ रयाल (सिक्के) दिये थे।

मसकत से वे फारस की खाड़ी के किनारे-किनारे दुबई की ओर चले। इस रास्ते में जंगल ही जंगल आता था। जंगल में बद्दू लोग मिलते थे, जो ऊंट और बकरियां चराते थे। वे लोग बिना लाइसेंस के सब प्रकार के हथियार रखते थे और राह चलने वालों को वह सैयद हो, या पीर, दूर ही से चिल्लाकर कह देते थे कि तुम्हारे पास जो सामान हो, रख दो। जो उनकी नहीं सुनता, गोली चला देते।

बद्दुओं के ऐसे ही एक गिरोह से रुचिराम जी का भी सामना हो गया। शाम का समय थ। बहुत से बद्दु लोग, जो लगभग नंगे थे और एक काला-सा कपड़ा शरीर पर लपेटे हुए थे, बकरियां और ऊंट चरा रहे थे, इनकी ओर दौड़े और अरबी में बोले- 'हाजी! तुम्हारे पास कितने पैसे हैं? सब सामान रख दो, नहीं तो मार देंगे'।

वे दौड़ते-दौड़ते बहुत पास आ गये थे। रुचिराम जी ने फौरन बन्दूक में कारतूस भर लिया और कहा- 'मैं हाजी नहीं हूँ, अब या तो जान लो या जान दो। यह देखकर एक बुड्ढा बद्दू कहने लगा- 'ऐ लड़के! हम तुम्हारे पास साथ हँसी कर रहे हैं। वे सब एक गोल दायरा बना कर- एक और पुरुष और दूसरी और स्त्रियां बैठ गये। रुचिराम जी ने थैले में से निकाल कर उन्हे एक शीशा, कमीज की बटनें और एक छोटी कैंची दी। शीशे में अपना-अपना मुँह देखकर वे स्त्री-पुरुष हँस-हँस कर लोट-पोट हो जाते थे। एक बद्दू ने एक छोटा सा पत्थर दिया और कहा कि, रास्ते में बद्दू लोग सतायें, तो यह पत्थर दिखा देना। आगे जाने पर दूसरे बद्दूओं के सरदार ने एक छोटी-सी लाठी दी। तीसरे इलाके में सफेद रंग का एक कपड़ा मिला। यही उधर का पासपोर्ट था। चलते-चलते वे दुबई पहुँच गये। यह भी बड़ा बन्दरगाह था। रुचिराम जी वहां के एक बादशाह शेख सईद से मिले। वहाँ हर एक मुसलमान शेख कहलाता है।

बादशाह शेख सईद ने रुचिराम जी को अपने मेहमान घर में टिका लिया और 'हिजबुल्लाह' धर्म के प्रचार में काफी सहायता दी।

दुबई में रुचिराम जी आठ दिन ठहरे। वहां भी कुछ हिन्दू बसे हुए थे। दुबई से नाव-ही-नाव वे पाँच दिनों में कतर पहुँच गये। यहां से अरब का विशाल बियाबान जंगल शुरु हो जाता है। कतर में उन्हे अललसा नजद जाना था, जो बारह दिन के रास्ते पर था।

क्रमशः

प्रेरणाप्रद कहानी

दृढ़ उद्देश्य से लाभ

- संग्रहकर्ता -
आचार्य मनुदेव वाग्मी

एक भक्त इमली के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान का भजन कर रहा था। एक दिन वहाँ नारद जी महाराज आ गये। उस भक्त ने नारद जी से कहा कि आप इतनी कृपा करें कि जब भगवान् के पास जायें तब उनसे पूछ लें कि वे मुझे कब मिलेंगे? नारद जी भगवान् के पास गये और पूछा कि अमुक स्थान पर एक भक्त इमली के वृक्ष के नीचे बैठा है और भजन कर रहा है, उसको आप कब मिलेंगे? भगवान् ने कहा कि उस वृक्ष के जितने पत्ते हैं, उतने जन्मों के बाद मिलूंगा। ऐसा सुनकर नारद जी उदास हो गये। वे उस भक्त के पास गये, पर उससे कुछ कहा नहीं। भक्त ने प्रार्थना की कि भगवान ने क्या कहा, कह तो दो। नारदजी ने कहा कि इस इमली पेड़ में जितने पत्ते हैं उतने जन्मों के बाद भगवान की प्राप्ति होगी। भक्त ने उत्सुकता से पूछा कि क्या भगवान ने खुद ऐसा कहा? नारद जी ने कहा कि हाँ, खुद भगवान ने ऐसा कहा है। यह सुनकर भक्त खुशी से नाचने लगा कि भगवान मेरे को मिलेंगे, मिलेंगे, मिलेंगे!! क्योंकि भगवान के वचन झूठे नहीं हो सकते। उतने में ही भगवान वहां प्रकट हो गये! नारद जी ने देखा तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। वे भगवान से बोले कि महाराज! अगर यही बात थी तो मेरी फजीतीं क्यों करायी? आपको जल्दी मिलना था तो मिल जाते। मेरे से तो कहा कि इतने जन्मों के बाद मिलूँगा और आप अभी आ गये! भगवान ने कहा कि नारद! जब तुमने इनके विषय में पूछा था, तब यह जिस चाल से भजन कर रहा था, उस चाल से तो इसको उतने ही जन्म लगते। परन्तु अब तो इसकी चाल ही बदल गयी। यह तो 'भगवान् मेरे को मिलेंगे'– इतनी बात पर ही मस्ती से नाचने लग गया! इसलिए मुझे अभी ही आना पड़ा। कारण की उद्देश्य की सिद्धि में जो अटल विश्वास, अनन्यता, दृढ़ता, उत्साह होता है, उससे भजन तेज हो जाता है।

एक सन्त थे। वे एक जाट के घर गये। जाटने उनकी बड़ी सेवा की। सन्तने उससे कहा कि रोजाना नामजप करने का कुछ नियम ले लो। जाटने कहा कि बाबा, हमारे को वक्त नहीं मिलता। सन्तने कहा कि अच्छा, रोजाना एक बार ठाकुर जी की मूर्ति का दर्शन कर आया करो। जाट ने कहा कि मैं तो खेत में रह जाता हूँ, ठाकुर जी की मूर्ति गाँव के मन्दिर में है, कैसे करूं?

सन्त ने उसको कई साधन बताये कि वह कुछ-न-कुछ नियम ले ले, पर वह यही कहता रहा कि मेरे से यह बनेगा नहीं। मैं खेत में काम करूँ या माला लेकर जप करूँ! इतना समय मेरे पास कहाँ है? बाल बच्चों को पालन-पोषण करना है, तुम्हारे जैसे बाबाजी थोड़े ही हूँ कि बैठकर भजन करूँ। सन्त ने कहा कि अच्छा, तू क्या कर सकता है? जाट बोला कि हमारे पड़ोस में एक कुम्हार रहता है, उसके साथ मेरी मित्रता है, रोजाना नियम से एक बार उसको देख लिया करूँगा। सन्त ने कहा की ठीक है, उसको देखे बिना भोजन मत करना। जाट ने स्वीकार कर लिया। जब उसकी स्त्री कहती कि रोटी तैयार हो गयी, भोजन कर लो तो वह चट बाड़पर चढ़कर कुम्हार को देख लेता और भोजन कर लेता। इस नियम में वह पक्का रहा।

एक दिन जाटको खेत में जल्दी जाना था, इसलिए भोजन जल्दी तैयार कर लिया। उसने बाड़पर चढ़कर देखा तो कुम्हार दीखा नहीं। पूछने पर पता लगा की वह तो मिट्टी खोदने बाहर गया है! जाट बोला कि कहाँ मर गया, कम से कम देख तो लेता। अब जाट उसको देखने के लिए तेजी से भागा। उधर कुम्हार को मिट्टी खोदते-खोदते एक हाँड़ी मिल गयी, जिसमें तरह तरह के रत्न, अशफियाँ भरी हुई थी। उसके मन में आया कि कोई देख लेगा तो मुश्किल हो जायेगी! अत: वह देखने के लिए ऊपर चढ़ा तो सामने वह जाट आ गया! कुम्हार को देखते ही जाट वापस भागा तो कुम्हार ने समझा कि उसने वह हाँड़ी देख ली और अब वह आफत पैदा करेगा। कुम्हार ने आवाज लगायी कि अरे, जा मत, जा मत। जाट वापस आया तो उसको धन मिल गया। उसके मन में विचार आया कि सन्त ने अपना मनचाहा नियम लेने में इतनी बात है, अगर सदा उसकी आज्ञा का पालन करूँ तो कितना लाभ है। ऐसा विचार करके वह जाट और उसका मित्र कुम्हार दोनों ही भगवान् के भक्त बन गये।

तात्पर्य यह है कि हम दृढ़ता से अपना एक उद्देश्य बना लें, कि चाहे जो हो जाय, हमें तो भगवान की तरफ चलना है, भगवान का भजन करना है। उद्देश्य बनाने की अपेक्षा भी उद्देश्य को पहचान लें। कारण कि उद्देश्य पहले बना है, मनुष्य जन्म पीछे मिला है। मनुष्य जन्म केवल भगवप्राप्ति के लिये ही मिला है- इस उद्देश्य को पहचान लें, सन्देह रहित मान लें तो फिर भजन अपने आप होगा।

स्वास्थ्य जगत् .... मूत्र-रोग नाशक के नुस्खे

१. अगर आपका पेशाब जल-जल कर होता है अथवा सूजाक जख्मों के मारे भयानक पीड़ा होती है, तो पेशाब खूब और साफ हो, आप ऐसा उपाय करें। सूजाक और प्रमेह आदि मूत्र-नली के रोग प्रायः पेशाब के खूब साफ होने से जल्दी आराम होते हैं। काम के लिये नीचे का नुसखा आजमूदा है-

रेवन्दचीनी, शोरा, कबावचीनी और इलायची छोटी- इनको बराबर-बराबर ले कर, कूट-पीस कर चूर्ण कर लो और महीने हो जाने पर छान लो। पाव भर गाय का दूध और पाव भर शीतल जल- दोनों को पचासों बार एक बर्तन से दूसरे पे लस्सी पी जाओ। खून साफ पेशाब आयेंगे।

२. चूहे की मैंगनी और कलमी-शोरा पानी के साथ सिर पर पीस नाभि के नीचे पेडू पर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करने से रुका हुआ पेशाब खुल जाता है।

३. सफेद जीरा ६ माशे और मिश्री ६ मासे- दोनों को पीस कर फाँकने और ऊपर से बताशों का घोला हुआ शर्वत पीने से पेशाब की जलन और कड़क मिट जाती है।

४. तरबूज के पाव भर पानी में सफेद जीरा और मिश्री मिला कर पीने से मूत्रकृच्छ और पेशाब की जलन आराम हो जाती है।

५. कवाबचीनी के चूर्ण में मिश्री मिलाकर खाने से मूत्र-रोग और पितज-प्रमेह आराम होते हैं।

६. केले के वृक्ष की छाल का रस ४ तोले और घी २ तोले मिला कर पिलाने से बन्द हुआ पेशाब खुल जाता है। मूत्राघात पर यह नुसखा उत्तम है।

७. गुनगुने दूध में गुड़ डाल कर पीने से पेशाब साफ होता है। **स्वास्थ्य रक्षा से साभार**

रामदुलारी बृजकिशोर धर्मार्थ चिकित्सालय
गुरुकुल आश्रम आमसेना द्वारा संचालित

पुराने गम्भीर रोगों के रोगियों के लिए आशा का किरण है गुरुकुल आश्रम आमसेना धर्मार्थ चिकित्सालय।

जो सज्जन एलोपैथिक चिकित्सा कराकर निराश हो गये है, ऐसे सज्जनों से आग्रह है कि गुरुकुल के धर्मार्थ चिकित्सालय में पूर्ण सावधानी पूर्वक पुराने असाध्य रोगों की सफल चिकित्सा आयुर्वेद से करवाए एवं लाभ उठावें।

सम्पर्क सूत्र-9437070541

कुमारिल भट् का अखण्ड व्रत

श्री सत्यानन्द आर्य

नव स्नातक भट्टाचार्य वेदभाष्य में तल्लीन थे। उनकी विधवा माता आई और बोली–''वत्स! तेरे विवाह की तैयारियाँ हो रही है आगामी सोमवार को संस्कार निश्चित हुआ है।''

''तथास्तु'' अनायास ही आचार्य के मुख से निकला।

विवाह के कुछ ही दिन बाद आचार्य की माता महाप्रयाण कर गई। आचार्य ने सहधर्मिणी को अपने अभिमुख आसन पर बिठाकर कहा– ''देवी! मैंने चारों वेदों का अविकल भाष्य समाप्त होने तक अखंड वह्मचर्य का सुसंकल्प धारण किया हुआ है। ब्रह्मस्थ हुआ मैं ब्रह्म के ब्रह्म (वेदज्ञान) का अनुवाद कर रहा हूँ। मुझे अपने शरीर की रक्षा का लेशमात्र भान नहीं रहता। अब तक माताश्री मेरी देख-रेख रखती थी, अब तुम रखना।''

श्रद्धापूर्ण हृदय से देवी ने उत्तर दिया– ''तथास्तु, देव!''

६८ वर्ष की आयु में पूर्णिमा की सायं भट्टाचार्य ने चारों वेदों का भाष्य समाप्त किया। उस रात पति-पत्नी को बड़ी निश्चिन्तता से निद्रा आई। रात्रि के चतुर्थ प्रहर में आचार्य की निद्रा भंग हुई। छत पर चटाई पर लेटे-लेटे वाम पार्श्व में एक तपस्विनी चटाई पर लेटी हुई है।

आचार्य ने अपने और अपनी सहधर्मिणी के श्वेत केशों को देख मन ही मन कहा– 'दोनों ही शिर चन्द्रिका के समान श्वेत हो गये।'

आचार्य ने अपनी वाम भुजा फैलायी। परन्तु पूर्व इसके कि वह देवी के शरीर का स्पर्श कर सकते, देवी उठकर खड़ी हो गई, पति को प्रणाम करती हुई बोली– ''देव! आयु के अंतिम प्रहर में भी इन दोनों अछूते जीवनों को अछूते ही बने रहने दो अब तक वेदभाष्य मे लगे रहे, अब वेद प्रचार में लग जाइसे''

सच्चा सुखी कौन ?

उत्कल साहित्य द्वारा प्रकाशित

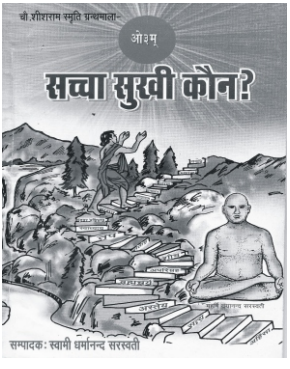

जीवन में सच्चा सुख कैसे मिले ?
इस विषय में उच्चकोटि के योगी सिद्ध महात्माओं के विचार क्या हैं ?
कौन सा कार्य करने से जिनमें सच्चा शांति मिलेगी
इत्यादि विषयों पर पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी ने अनेक महात्माओं के उपदेशों का संग्रह किया है ।

इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़ें ।

प्रकाशक : गुरुकुल आश्रम आमसेना , खरियार रोड़ , नुआपड़ा (ओडिशा) ७६६१०९

महर्षि देव दयानन्द एक सच्चे गुरु थे

खुशहालचन्द्र आर्य

सच्चा गुरु वही होता है जो अपने शिष्यों को अच्छी शिक्षा देकर अज्ञान से ज्ञान की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। अन्धविश्वास, पाखण्ड व मूर्तिपूजा से हटाकर ईश्वर की सच्ची उपासना जो संन्ध्या, हवन, सत्संग व अष्टांग योग है। उनकी ओर ले जाता है। इन कार्यों में देव दयानन्द ने अपनी एक विशेष अच्छी व अलग ही पहचान बना रखी है। यह सद्गुरू श्रृखंला आदि सृष्टि से चली आ रही है और सृष्टि के अन्त तक चलती रहेगी कारण मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी है, उसको सही रास्ता दिखाने के लिए अपने से एक सच्चे गुरु की आवश्यकता पहले भी सदा रही है और आगे भी रहती रहेगी।

जैसा कि मैंने लिखा है कि सद्गुरु की श्रृखंला सृष्टि के आदि से चली आ रही है। वेदों के देव, पिताओं के पिता और गुरुओं के गुरु ईश्वर ने सृष्टि के आदि में, सृष्टि की पूरी रचना करने के बाद मनुष्यों की उत्पत्ति अनेक नौजवान स्त्री पुरुषों के रूप में की, जिससे आगे सृष्टि चलती रहे। तभी ईश्वर ने मनुष्यों को सही मार्ग दिखाने के लिए यानि धर्म, अर्थ, काम को धर्मानुसार करते हुए मोक्ष जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है उसे प्राप्त करने के लिए सबसे अधिक पवित्र आत्मा वाले चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा था, उनके श्रीमुख से चार वेदों को जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं, उनको उच्चारित करवाया। वह वेद- ज्ञान उपस्थित सभी पुरुषों व स्त्रियों ने सुना, परन्तु उनमें भी ब्रह्मा जो सर्वश्रेष्ठ ऋषि थे, उनकी स्मरण शक्ति बहुत तेज थी, उन्होने इन चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और उपस्थित लोगों को सुनाते रहे फिर यह कर्म पिता, पुत्र को, गुरु शिष्य को सुनाना लाखों वर्षों तक चलता रहा। जब स्याही, कलम, दवात, कागज का आविष्कार हो गया तब इन चारों वेदों को पुस्तक बद्ध कर दिया जो अभी तक चलते आ रहे हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि सृष्टि के आदि से मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए वेदों का ज्ञान देने वाला ईश्वर सर्वप्रथम सद्गुरु हुआ। फिर ब्रह्मा उन वेदों को कण्ठस्थ करके आम जनता को सुनाते रहे इसलिए दूसरे सद्गुरु ब्रह्मा हुए। तत्पश्चात् त्रैता में रामायण काल में हमें दो सद्गुरु दिखाई देते हैं जिनके नाम हैं वशिष्ठ व विश्वामित्र। जिन्होने रावण, कुम्भकरण जैसे बलशाली व अन्यायी राक्षसों

का संहार करने के लिए एक योजना बद्ध तरीके से श्रीराम और लक्ष्मण को राजा दशरथ से उन्हे धनुर्विद्या तथा अन्य विद्या सिखाई जिससे वे रावण को उसके पूरे परिवार सहित मारने में सफल हुए जिससे आम जनता को सुखी बनाया और ऋषि मुनियों के यज्ञों को अपवित्र होने से बचाया। इसलिए ये भी सद्गुरु की श्रेणी में आते हैं। फिर हम जब आगे बढ़ते हैं तो द्वापर में महाभारत के समय दो गुरु दिखाई देते हैं गुरु द्रोण और गुरु कृपाचार्य पर इनको हम सद्गुरु की श्रेणी में नहीं गिनते कारण इन्होने अपने स्वार्थ के लिए अपने कर्त्तव्य को त्यागकर पापी दुर्योधन का साथ देकर अधर्म का काम किया। तत्पश्चात् भारत के इतिहास को जब हम सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करते हैं तो चन्द्रगुप्त के सद्गुरु चाणक्य का नाम आता है जिसने चन्द्रगुप्त जैसे योग्य बच्चे को सुशिक्षित व शस्त्र विद्या में निपुण बनाया और जनता को सुखी बनाया। इसके बाद हम आगे बढ़ते हैं तो शेर शिवाजी के सद्गुरु रामदास पर हमारी दृष्टि पड़ती है जिसने शेर शिवाजी को युद्ध विद्या में निपुण करके औरंगजेब जैसे पापी बादशाह के राज्य को नष्ट करवाया। फिर हम आगे चलते हैं तो हमारी दृष्टि उस महान् सद्गुरु चक्षु विहीन स्वामी विरजानन्द पर पड़ती है जिसने अपने योग्य शिष्य बाल ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द को तीन वर्ष अपनी गोद में रखकर उसको वेदों की कुंजी प्रदान की जिससे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने, जो उस समय आचार्य सायण व उब्बट द्वारा वेदों का जो गलत और अश्लील भाष्य किये थे, उनको गलत साबित करके, वेदों के सही भाष्य करके विश्व में वेदों का प्रकाश किया। महर्षि दयानन्द ने न केवल वेदों का सही भाष्य ही किया बल्कि अपने सद्गुरु विरजानन्द को गुरु दक्षिणा के रूप में बचन दिये थे उनको पूरी उम्र उन वचनों का पालन करते हुए विश्व में जो अज्ञान के कारण अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला था उसको रोकने की किसी में हिम्मत नहीं थी, उस समय देव दयानन्द ने अपनी जान को जोखिम में डालकर वेदों के सही अर्थ बतलाकर उस अन्धविश्वास व पाखण्ड को मिटाया और दुखियों असहायों व निर्बलों का सहारा बने। गाय की चीत्कार को सुना और विधवाओं के आंसू पोछे तथा आजादी का शंखनाद फूँका। इस प्रकार देश में नवजागृति का संचार किया। महर्षि दयानन्द नवजागरण के पुरोधा कहलाए जाते हैं। किसी कवि ने ठीक ही कहा है–

सौ बार जन्म लेंगे, सौ बार फन्नां होंगे,
एहसास! दयानन्द के, फिर भी न अदा होंगे।

'वेद ही मनुष्य मात्र के परम आदरणीय व माननीय धर्म ग्रन्थ क्यों?'

-मनमोहन कुमार आर्य

एक शब्द 'धर्म' है जिसका विपरीत व विरोधी अथवा विलोम शब्द अधर्म है। यह धर्म शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है। यह शब्द हिन्दी भाषा में संस्कृत से ही आया है। अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, अरबी व संसार की अन्य भाषाओं में इसका प्रयोग नहीं हुआ है। वेद निर्विवाद रूप से संसार की सबसे पुरानी पुस्तक है। वेद से प्राचीन पुस्तक या मत-पन्थ-धर्म का अन्य कोई ग्रन्थ संसार में नहीं है। यदि वेद को समग्रता में जान लिया जाये तो सच्चे हृदय के विवेकशील व बुद्धिजीवी लोग यह स्वीकार करेंगे कि वेद मानव आचार संहिता वा धर्म शास्त्र है। धर्म मनुष्य जीवन में श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव को धारण करने को कहते हैं। मनुष्य को क्या धारण करना चाहिये? मनुष्य के लिए सबसे अच्छी व आवश्यक यदि कोई वस्तु संसार में है तो वह 'सच्चे व अच्छे गुण, कर्म व स्वभाव' ही हैं। यह अच्छे गुण, कर्म व स्वभाव का धारण ही धर्म पालन कहलाता है। वेद के ऋषियों ने सृष्टि के आदि काल में मनुष्यों को 'सत्यं वद धर्म चर' का उपदेश किया था। इसका अर्थ है सत्य बोलो और धर्म पर चलो। इससे यह संकेत मिलता है कि सत्य बोलना व सत्य का ही आचरण करना धर्म कहलाता है। आजकल सभी पौराणिक मतों व अन्य मतों के आचार्यों द्वारा चलाये जा रहे मत, बौद्ध, जैन, ईसाई व इस्लाम, सब अपने मत को धर्म कहते हैं। अब प्रश्न यह है कि यदि इन सबकी सभी मान्यतायें व शिक्षायें सत्य बोलने व सत्य का पालन सहित उनका आचरण करने की बातें करती हैं, तभी यह धर्म हो सकती हैं अन्यथा यह धर्म नहीं हो सकतीं। यहां यह भी बता दें कि वेद मत को छोड़कर अन्य कोई भी मत, पन्थ एवं सम्प्रदाय शत-प्रतिशत सत्य विचारों व मान्यताओं पर आधारित नहीं है। जो मत व पन्थ सर्वांश में सत्य न हो, वह मत वा धर्म अधूरा व आंशिक धर्म ही हो सकता है समग्र धर्म नहीं, जैसा कि वेद पर आधारित वैदिक धर्म पूर्णता में सत्य धर्म है। वेद से इतर जितने भी मत संसार में हैं उनमें किसी में कम तो किसी में अधिक अवैदिक व असत्य मान्यताओं व परम्पराओं की भरमार है। उन मान्यताओं के रहते वह पूर्ण व सत्य मत नहीं कहला सकते और इसी आधार पर वह पूर्ण धर्म भी नहीं हैं। कपड़े में दाग लग जाये तो लोग उसे साफ करते हैं। इसी प्रकार से धर्म वा मत में असत्य मान्यतायें व कर्म भी कपड़े पर दाग के सामान हैं। यदि उन्हें अच्छे साबुन से रगड़ रगड़ कर धोकर साफ नहीं किया जायेगा तब तक वह पूर्ण व सच्चे धर्म की संज्ञा नहीं पा सकते। कहने के लिए कोई अपने मत की प्रशंसा किन्हीं भी शब्दो में क्यों न करे, परन्तु विवेकशील लोगों को सच्चाई व वास्तविक स्थिति का ज्ञान है। दुःख इसी बात का है कि कोई भी मताचार्य अपने मत की अशुद्धियों, बुराइयों व असत्य मान्यताओं की पहचान कर उसे हटाने का प्रयत्न नही करता क्योंकि उन्हें यह तथ्य भलीभांति ज्ञात है कि ऐसा करने पर उनके मत का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा। इसका अपवाद

केवल व केवल वेद द्वारा प्रचलित व पालित सबसे प्राचीन, सृष्टि के आरम्भ से प्रचलित वैदिक धर्म है जो समस्त ज्ञात व अज्ञात सत्य मान्यताओं से सुभूषित धर्म है। इसी सत्य वैदिक धर्म का आर्यसमाज विगत 142 वर्षों से आन्दोलन के रूप में प्रचार करता चला आ रहा है।

अब सत्य व असत्य के स्वरूप पर विचार करते हैं। सत्य किसी पदार्थ के यथार्थ वा वास्तविक स्वरूप को कहते हैं। एक पदार्थ काले रंग का है तो उसे काला जानना व दूसरों को बताना ही सत्य होगा। इसके विपरीत यदि जानकारी के अभाव व अन्य किसी भी कारण से हम उसका सहीं रंग नहीं जानते व बताते हैं तो वह असत्य होता है। इसी प्रकार से ईश्वर, जीव व प्रकृति व अन्य सभी विषयों से संबंधित उनके सत्य व असत्य स्वरूप, पक्ष व गुण, कर्म, स्वभाव व चरित्र आदि हुआ करते हैं। ईश्वर का स्वरूप सच्चिदानन्दस्वरूप है। इसका अर्थ है कि ईश्वर सत्य, चित्त व आनन्द स्वरूप वाला है। सत्य का अर्थ है कि उसकी सत्ता यथार्थ है, वह काल्पनिक सत्ता वाला नहीं है। चेतन का अर्थ है कि वह जड़ के विपरीत ज्ञान व कर्म करने वाली तथा संवेदना, दया, करूणा, जीवों के कल्याण व हित को चाहने वाली सत्ता है। इसके साथ ईश्वर दिखाई न देने से निराकार, इस ब्रह्माण्ड की विशालता के कारण सर्वव्यापक, ज्ञानपूर्वक लोक लोकान्तर एवं मनुष्य आदि प्राणियों की सृष्टि करने वाला होने से ईश्वर सर्वज्ञ व सृष्टिकर्ता, हमारे कर्मों का नियामक होने से सर्वान्तर्यामी, सदा से विद्यमान रहने से अनादि, नित्य, अनुत्पन्न, अजन्मा, अजर, अमर, अविनाशी व अनन्त सिद्ध है। दुखियों के दुख करने के कारण व वृद्धावस्था के दु:खों से छुड़ा कर व सुखदायक मृत्यु देकर व उसके बाद कर्मानुसार पुनर्जन्म देकर वह करूणामय व दयालु सिद्ध होता है। वह हमारे सभी कर्मों का साक्षी होकर हमें हमारे शुभाशुभ कर्मों का फल जन्म वा पुनर्जन्म के रूप में देकर एवं कर्मों का सुख-दु:ख रूपी भोग कराने वाला होने से वह न्यायकारी, न्यायाधीश एवं हमारा राजा भी है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है अत: वह अपने काम स्वयं करता है, किसी की किंचित सहायता की उसको अपेक्षा नहीं है। उसका कभी जन्म व अवतार भी नहीं होता। सर्वव्यापक का अवतार लेना ऐसा है कि जैसे किसी सार्वभौमिक राजा को कोई व्यक्ति अपने समान व न्यून एक साधारण मनुष्य माने। यह जो वर्णन किया है वह ईश्वर का सत्यस्वरूप हैं। जिन ग्रन्थों में ईश्वर का ऐसा स्वरूप पाया जाता है, उनकी ऐसी बातें सत्य मानी जा सकती हैं और यदि किसी ग्रन्थ में ईश्वर को इसके विपरीत एकदेशी, ससीम, अवतार लेने वाला, रास-रंग करने वाला, मनमानी करने वाला व अपने मत के लोगों को सुख व स्वर्ग व दूसरें मतों के लोगों को दु:ख, दोजख व नरक की आग में जलाने वाला बताने वाले मत व उनके ग्रन्थ में ईश्वर का ऐसा स्वरूप सत्य व तर्कसंगत मान्य नहीं माना जा सकता।

इसी प्रकार से जीवात्मा, जो कि सभी प्राणियों के शरीरों में विद्यमान है, वह सत्य, चित्त, एकदेशी, ससीम, अल्पज्ञ, अनादि, नित्य, अनुत्पन्न, अजर, अमर, ज्ञान प्राप्ति व कर्म करने की सामर्थ्य वाला, कर्मानुसार पूर्वजन्मों, इस जन्म व परजन्मों में आने जाने वाला होता है। **क्रमशः**

गुरुकुल आमसेना का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

गुरुकुल के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की तैयारी अब जोर-शोर से शुरु हो गई है। स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर गुरुकुल का ५० वर्षीय इतिहास भी प्रकाशित किया जा रहा है। इस इतिहास का लिखना प्रारम्भ हो गया है अब टंकण चल रहा है।

इतिहास में प्रकाशित करने के लिए जिन विद्वानों को पत्र भेजकर लेख भेजने की प्रार्थना की थी। उन विद्वानों ने कृपापूर्ण लेख भेजना प्रारम्भ कर दिया। किसी कारणवश गुरुकुल प्रेमी विद्वानों को हमारा पत्र नहीं मिला हो वे मान्य विद्वान भी कृपा करके गुरुकुल शिक्षा एवं गुरुकुल के सम्बन्ध में अपना संक्षिप्त लेख भेज सकें तो गुरुकुल परिवार उनका हार्दिक आभारी रहेगा।

गुरुकुल की ओर से बहुत से विद्वानों को स्वर्ण जयन्ती के अवसर में प्रायः विज्ञापन भेजा गया है। यदि किसी कारण से सूचना नहीं मिली हो तो अपने कृपापूर्ण पत्र से सूचित करें।

भवदीय

प्रधान	**संचालक एवं मुख्याधिष्ठाता**	**आचार्य**
कै. रुद्रसेन जी सिन्धु	स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती	स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती

देश की अखण्डता में सहयोग देने वाले श्रद्धालु सज्जनों से नम्र निवेदन

आप सब जानते हैं कि गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से कई संस्थाएं देश के पूर्वाञ्चल में विदेशियों से प्रभावित क्षेत्रों में चल रही है इन संस्थाओं की व्यवस्था आदि में सहयोग देने के लिए कुछ देशभक्त अनुभवी श्रद्धालु कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। अतः जो सज्जन गृहकार्य से निवृत्त हैं तथा देश में वैदिक धर्म का प्रचार, रक्षा एवं अखण्डता में सहयोग देने के इच्छुक हैं वे निम्न पते पर सम्पर्क करें। उनकी निवास भोजन के साथ उचित मात्रा में दक्षिणा भी दी जायेगी।

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती- ९४३७०७०३९२

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के तैयारी की विषय में गुरुकुल के स्नातक मण्डल की प्रथम बैठक सम्पन्न

गुरुकुल के कृपालु सदस्य यह तो जान ही गये है कि इस वर्ष अति हर्षोल्लास पूर्वक गुरुकुल का ५० वर्षीय स्वर्ण जयन्ती महोत्सव २३, २४, २५, दिसम्बर २०१७ को मनाया जाएगा।

इसी तैयारी के लिए गुरुकुल आश्रम आमसेना से विद्या अध्ययन करके गये हुए स्नातकों के प्रथम मीटिंग गुरुकुल आश्रम के संस्थापक एवं संचालक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी के अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में गुरुकुल आश्रम आमसेना से विद्याध्ययन करके देश के विभिन्न भागों में सेवारत स्नातकों के प्रथम बैठक में ६० से अधिक स्नातक तथा स्नातिकाओं ने पहुंचकर अपने गुरुजनों के एवं अपनी विद्यादात्री भूमि इनका आशीर्वाद लेकर अपने को कृतकृत्य किया।

अपनी विद्यादात्री भूमि में आने वाले उस वरिष्ठ स्नातकों के नाम इस प्रकार है- श्री आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी, गुरुकुल आश्रम आमसेना, श्री आचार्य अखिलेश जी शास्त्री, श्री आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी, श्री रणवीर जी शास्त्री, श्री रणधीर जी शास्त्री, श्री उद्धवशास्त्री, श्री ईश्वर जी पटेल, श्री अरक्षित जी, श्री जगन्नाथ जी शास्त्री, आचार्य सुदर्शन देव जी व्रती, आचार्य पुरन्दर जी, आनन्द कुमार जी, श्री दिव्येश्वर जी, श्री कोमल कुमार जी, श्री विनय जी, श्री बुद्धदेव जी, आदि अनेक स्नातिकाओं अनेक स्नातकों के साथ सुश्री आचार्या पुष्पा जी, सुश्री आचार्या कौशल्या जी, सुश्री आचार्या ममता जी, सुश्री आचार्या कान्ता जी, सुश्री आचार्या नीलिमा जी,आदि स्नातिकाओं ने भी अपनी उपस्थिति देकर सबका उत्साह बढ़ाया। अधिवेशन के प्रारम्भ होने पर सभी स्नातकों ने प्रथम चरण वन्दना कर आशीर्वाद लिया। तत्पश्चात् गुरुकुल के वरिष्ठ स्नातक, ओजस्वी वक्ता, प्रकाण्ड विद्वान् आचार्य वीरेन्द्र जी ने इस मीटिंग की भूमिका उपस्थित करते हुए कहा कि जैसा आप जानते है कि गुरुकुल के आमन्त्रण पर आप सबने इस भीष्म गर्मी में अपना सब कार्य त्यागकर अपनी विद्यादात्री भूमि में पहुंचकर बड़ी श्रद्धा प्रकट की है। आपकी इस उपस्थित से प्रतीत होता है कि इस भूमि के प्रति आपका विशेष श्रद्धा भक्ति एवं प्यार है इससे स्पष्ट होता है कि गुरुकुल का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव सफल रहेगा।

इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए श्री रणवीर जी शास्त्री, श्री, ईश्वरचन्द जी पटेल आदि वरिष्ठ स्नातकों ने भी अपने सुझ-बुझ भरे विचारों को प्रकट किया। इसके पीछे गुरुकुल संचालन पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी ने कहा कि अपने योजनाएं तो प्रकट करे ही परन्तु संक्षेप में इसी विचारों को रखे कि स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाने के लिए हम क्या-क्या करेगें। स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की सफलता के लिए इस कार्यक्रम का प्रचार सब ओर विस्तार रुप से हा। देश-विदेश में इस स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाने की सूचनाएं फैल जाएं। सन् २०१२ में ही दीक्षा स्वर्ण जयन्ती मनाने पर लगभग ३५ लाख रुपये खर्च हुआ था गुरुकुल का यह स्वर्ण जयन्ती महोत्सव एक बड़ा एवं भव्य होगा। इस सुभावसर पर सभी साधु विद्वान् सन्यासी एवं वानप्रस्थियों के साथ सभी गुरुकुल के आचार्यों, आचार्याओं तथा विद्यार्थियों

को भी निमंत्रित किया गया है। अब तक लगभग १५० पत्र साधु, महात्माओं एवं विद्वानों के पास भेजे जा चुके है। सब ओर से सहयोग के आश्वासन मिल रहा है। परन्तु प्रथम आहुति स्नातकों की ओर से हो तो यह बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य होगा। सामाजिक प्रेरणा से प्रेरित होकर आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी (दिल्ली) ने कहा कि मैं और मेरा छोटा भाई आचार्य मंजीत कुमार जी शास्त्री कम से कम १० लाख रुपये का सहयोग करेगें। आचार्य वीरेन्द्र जी ने यह घोषणा करके उन्होंने सभी स्नातको को अपनी-अपनी घोषणा करने के लिए प्रेरित एवं उत्साहित किया। श्री ईश्वरचन्द्र जी पटेल १० हजार रुपये एवं अधिक से अधिक समय देने का आश्वासन दिया। इसी प्रकार श्री रणवीर जी, श्री रणधीर जी, श्री जगन्नाथ जी ने १०-१० हजार रुपये का सहयोग एवं पांच-पांच दिन का सहयोग देने का भी वचन दिया। श्री पुरन्दर जी शास्त्री ने १५ हजार रुपये एवं आवास व्यवस्था में समय देने का वचन दिया। इसी प्रकार आचार्य सुदर्शन जी ने प्रचार में समय देने तथा २१ हजार रुपये देने का वचन दिया इसी प्रकार आनन्द कुमार जी शास्त्री ११ हजार रु., श्री धीरज कुमार जी शास्त्री १३ हजार रु., श्री दिव्येश्वर जी आचार्य ने एक महीने का वेतन तथा एक क्विंटल चावल, श्री सन्तोष कुमार शास्त्री जी ने एक माह का वेतन एवं रसीद लेकर धन संग्रह का वचन दिया इसी प्रकार श्री मुकेश जी, श्री जितेन्द्र जी ने (संचालक श्री कृष्ण जी आदर्श गौशाला) ने २१ हजार रुपये, आचार्य अखिलेश जी, ने ११ हजार रु., आचार्य हलधर जी ने १ महिने का वेतन आचार्या पुष्पा जी ने कन्या गुरुकुल की ओर से २१ हजार रुपये, श्री राकेश कुमार जी एवं प्रवीण कुमार जी ने ५१-५१ हजार रुपये, श्री परीक्षित जी शास्त्री ने ५ हजार रुपया, श्री अरक्षित जी शास्त्री (दिल्ली) ने जयन्ती में एक दिन का भोजन का खर्च देने का वचन दिया। इसी प्रकार आचार्या सुजाता जी, आरती जी, निलिमा जी, निरुपमा जी, नर्मदा जी, कान्ता जी, शारदा जी, संगीता जीं भी सब प्रकार के सहयोग देने का आश्वासन दिया। अन्त में सभी ने आवास, यातायात, भोजन, उत्सव के प्रचार-प्रसार के कार्यक्रमों पर संक्षेप में चर्चा हुई तथा इन सभी की व्यवस्था अच्छी प्रकार की जाएं अन्त में गुरुकुल के आचार्य श्री स्वामी व्रतानन्दजी ने सभी को धन्यवार देते हुए सभी से आग्रह किया कि गुरुकुल का ५० वार्षिय इतिहास गुरुकुल के स्वर्ण जयन्ती पर प्रकाशित किया जा रहा है। तथा आप सभी स्नातक बन्धु गुरुकुल में निवास के समय के अनुभव एवं संक्षिप्त में परिचय छायाचित्र के साथ भेजने का यत्न करेंगे। इस प्रकार शान्ति पाठ पूर्वक उत्साहमय वातावरण में यह अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

सेवा में,

.....

.....

.....

सदस्यता हेतु एक प्रतिः 10 रु. वार्षिक शुल्कः 100 रु. आजीवनः 1000 रु.

प्रधान सम्पादकः स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से शारदा आफसेट प्रिन्टर्स, ग्राम-डुण्डा, सेजबहार रोड, रायपुर से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया। प्रकाशकः गुरुकुल आश्रम, आमसेना, खरियार रोड, नुआपड़ा (ओ